SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-1, Issue-3, March- 2024
www.shikshasamvad.com

"बालक के सांस्कृतिक एव सामाजिक विकास में परिवार की भूमिका"

सुमन कुमारी
शोधार्थिनी
ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर, उ0प्र0.

डॉ0 धर्मेन्द्र सिंह
शोध पर्यवेक्षक
ग्लोकल विश्वविद्यालय, सहारनपुर, उ0प्र0

परिवार, बच्चे के व्यक्तित्व विकास मे एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक व्यक्ति की वास्तविक नींव घर पर परिवार में रखी जाती है। परिवार के विभिन्न पक्षों का बच्चे के व्यक्तित्व पर प्रभाव निम्नलिखित प्रकार से पड़ता है–

(क) माँ की भूमिका– *माँ बच्चे के व्यक्तित्व विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। रीब्बेल लिखते हैं कि एक न्यायोचित ममत्व की मात्रा बच्चे को मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की सन्तुष्टि के लिए उतनी आवश्यक है जितनी ऑक्सीजन, भोजन निद्रा आदि उसके शरीरिक कल्याण के लिए।*

मरफी *लिखते हैं कि माताएं अक्सर ऐसा मान लेती हैं कि यदि बच्चा साफ तथा प्रेमपूर्वक रखा जाता है, नियमित अन्तराल बाद भोजन दें तथा निश्चित समय पर सोता है तो उसकी वृद्धि सामान्य होगी। लेकिन कोशिकीय विकास और स्वास्थ्य में अन्तर्निहित बहुत अधिक प्रभावित होती है। मानवीय स्पर्श की मृदुता तथा गरमाहट, लय तथा क्रिया, भावात्मक मुक्ति तथा सुरक्षा की भावना द्वारा भी बच्चे प्रत्येक चिकित्सा और आरोग्य, सुविधा सहित बिना माँ के प्यार और देखभाल के सन्तुष्ट वृद्धि तथा विकास नहीं दर्शाते हैं।*

अति पालन पोषण व्यक्तित्व विकास में स्वास्थ्यवर्धक नहीं होता है। कुछ माताएं बच्चों को इतना नाजुक बना देती हैं कि उनके लिए प्रत्येक कुत्ता काटता है और ही गाय एक साँड है। वे बच्चों को डरपोंक बनाती हैं और इतनी अधिक सुरक्षा देकर, उन्हें असुरक्षित बनाती हैं और वे उनके आत्म–विश्वास व स्वतन्त्र विचारों एवम् क्रियाओं के विकास में बाधा उत्पन्न करती हैं।

(ख) पिता की भूमिका– पिता की प्रकृति भी बच्चे को प्रभावित करती है। यदि पिता अपने बच्चे से उचित लगाव रखता है, उनका मित्र–सम हैं, उसकी समस्याओं पर उसके साथ विचार करता है, ज्ञानवर्धक पारिस्थितयाँ प्रदान करता है, उनके विचारों को उचित महत्व देता है और उनके कल्याण में अभिरूचि दर्शाता

है तो उसका हृदय भावनात्मक सुरक्षा अनुभव करेगा तथा अपनी समस्याओं के समाधान में आत्मविश्वास प्राप्त करेगा। एक पिता जो स्वभाव से असामाजिक कार्य करता है, एक अच्छा आदर्श कभी नहीं बन सकता।

माता–पिता का व्यवहार बच्चों के व्यक्तित्व विकास में सहायक होता है। यह पाया गया है कि विखंडित घरों के बच्चे सामान्यता कुसमायोजित होते हैं।

(ग) परिवार के अन्य सदस्यों की भूमिका– माता–पिता के अलावा, परिवार के अन्य सदस्य जैसे भाई, बहन, नाना–नानी व दादा–दादी आदि भी बच्चों के व्यक्तित्व पर एक प्रभाव बनाते हैं। यह देखा गया है कि बड़ा भाई या बहन अधिक पढ़ने वाले या मेहनती प्रकृति के हैं तो छोटे अक्सर उनका अनुसरण करते हैं।

कुछ स्थितियों में, नाना–नानी या दादा–दादी अपने पोते–पोती या नाते–नाती को अत्यधिक प्यार की मात्रा देते हैं। यह उन्हें भ्रष्ट कर सकते हैं। तब दुःखी हो सकते हैं जब कभी वे समस्या का समाना करते हैं। बच्चे के माता–पिता और नाना–नानी या दादा–दादी को एक दूसरे के साथ सन्धिपूर्वक निर्धारण करना चाहिए कि उन्हें उनके साथ कैसा व्यवहार बनाना चाहिए।

(घ) परिवार का आकार– बच्चे का व्यक्ति उसके उस परिवार के आकार, जिसका वह सदस्य है, द्वारा भी प्रभावित होता है। यद्यपि छोटे परिवार के आधुनिक झुकाव के परिणामस्वरूप बच्चे की अच्छी देखभाल हुई है, इसने उसे उन सामाजिक हाथों तथा जीवित वातावरण जो संयुक्त तथा सापेक्ष बड़े परिवारों में विद्यमान होते हैं, से भी अलग किया है। छोटा परिवार समय की आवश्यकता है। माता–पिता से अपेक्षा की जाती है कि अधिक समय बच्चों को दें ताकि वे सामाजिक सम्पर्कों की कमी न अनुभव कर सकें जो सम्भवतः छोटे एवं एकीकृत परिवारों के कारण हो सकती है। छोटे परिवारों के बच्चे बड़े परिवारों के बच्चों की अपेक्षा अधिक साहसी होते हैं।

(ड.) परिवार का आर्थिक स्तर– परिवार का आर्थिक स्तर भी बच्चे के व्यक्तित्व के प्रकार की व्याख्या करता है। आर्थिक रूप से कमजोर परिवार के बच्चे सामान्य तथा असुरक्षित एवं दबा हुआ अनुभव करते हैं क्योंकि उनकी आवश्यकताएं सही तरह पूरी नहीं हो पाती हैं। दूसरी तरफ, उनकी मांगों का माता–पिता के अत्यधिक दयालु प्रवृत्ति के कारण तुरन्त पूरा किया जाना भीउनके व्यक्तित्व वृद्धि को प्रभावित करता है।

(च) निवास की स्थिति– शहरी क्षेत्रों में पिता अधिक समय कार्य पर घ से बाहर रहते हैं और अपने बच्चों से बातचीत का कम समय रखते हैं। अधिक सामाजिक व सामुदायिक जीवन युक्त परिवारों में, वयस्कों तथा बच्चों के बीच अधिक सम्पर्क होता है। परिवार के सदस्यों के बीच एक उचित सम्बन्ध भावनात्मक सुरक्षा को बढ़ना है जो बच्चे के सन्तुलित व्यक्तित्व में सहायक होता है।

(छ) जन्म का क्रम– यह देखा गया है कि परिवार का प्रथम बच्चा माता–पिता का अधिक ध्यान पाता है। यह उसे अधिक निर्भर बनाता है और वह अधिक असुरक्षित अनुभव करता है। दूसरा बच्चा सामान्यतः कम निर्भर होता है और एक अच्छे समायोजित जीवन की ओर बढ़ता है। वह विश्वसनीयता तथा परिश्रम के गुणों को अर्जित करता है। बाद में बच्चे सुरक्षा, आत्मविश्वास तथा अच्छी प्रकृति की भावना रखते ही। ऐसे बच्चे कभी–कभार अनुभव कर सकते हैं कि माता–पिता उनकी रूचियों को अनदेखा करते हैं।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

बालक के व्यक्तित्व–विकास में समाज की भूमिका– परिवार, समाज के एक महत्वपूर्ण भाग के रूप में पिछले हिस्से में पृथक रूप से चर्चित किया जा चुका है। परिवार के अलावा, कुछ अन्य महत्वपूर्ण सामाजिक संस्थाएं एक व्यक्ति के व्यक्तित्व को बेहद प्रभावित करती है।

स्कूल बच्चे के बौद्धिक, शारीरिक एवं सामाजिक वृद्धि में एक महत्वपूर्ण सहायक की भूमिका निभाता है। स्कूल, एक सामाजिक ऐजेंसी के रूप में बच्चे की स्नेह, स्वीकृति, पहचान या मान्यता, स्वतन्त्रता आदि आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायकता करता है। कक्षा प्रयोग की निरंकुश पद्धतियाँ इन गुणों के विकास में सहायक नहीं होती हैं। लोकतान्त्रिक रीतियों का अनुसरण करने वाले अध्यापक बच्चों के भावनात्मक तथा सामाजिक विकास में सहायता करते हैं। लेविन (Lewin) और उसके साथियों ने तीन प्रकार के सामाजिक तत्वों अर्थात् निरंकुश, लोकतान्त्रिक तता यथेच्द कारिता के प्रभावों की तीन कक्षा बैठकों में अध्ययन किया। यह पाया गया निरंकुश व्यवहार सहने वाले विद्यार्थी अधिक उपद्रवी थे और कक्षा कार्य में रूचि ल रहे थे। लोकतान्त्रिक व्यवहार ने कार्य में अधिक रूचि भरी है। इनके अलाावा, वे अच्छे मित्र तथा एक दूसरे के प्रशंनसक भी पाए गये।

स्कूल व्यक्तिगत विद्यार्थियों की आवश्यकतानुसार शिक्षण को अनुकूल बनाकर बच्चों के विकास में और अधिक सहायता कर सकता है। अनेक प्रगतिशील विधियाँ, जैसे– डालटन योजना, विननेटका तकनीक, योजना विधि, शिक्षण की खेल (Play-way) विधि आदि बचचे के व्यक्तित्व को महत्वपूर्ण बनाती है तथा उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप अधिगम प्रक्रियाओं को बनाकर इनके विकास के अधिक अवसर प्रदान करती है।

अध्यापक को यह समझना चाहिए कि प्रशंसकीय सम्बोधन विद्यार्थियों के आत्मबल को प्रोत्साहन देते हैं कि वे भी सूक्ष्म समाज अर्थात स्कूल के स्वीकृत सदस्य हैं। उन्हें इसकी भी जागरूकता होनी चाहिए कि उदासीनता या अपमान उनको अपेक्षित अनुभव कराता है। समूह में स्वीकृत सदस्य अधिक आत्मविश्वास पाते हैं और अधिक सुरक्षा की भावना रखते हैं जो उन्हें अन्य लोगों से उचित समायोजन में सहायता करती है।

धर्मिक संस्थाएं भी व्यक्तित्व को अनुकूल या प्रतिकूल प्रभावित करने में एक विशेष योग्यता रखती हैं। यथार्थ में, सभी धर्म एक निर्माण व्यक्तित्व के निर्माण में सहायक करते हैं किन्तु कुछ हठधर्मी धर्म के विरूद्ध हिंसक ईर्ष्या फैलाते हैं जो वे पसन्द नहीं करते हैं। चाहे समाज की कोई भी संस्था ही हो, उसे यह विश्वस्त करना चाहिए कि प्रत्येक धर्म सही प्रकार से प्रदर्शित किया जाना चाहिए। यह ही बच्चे के सन्तुलित व्यक्तित्व–विकास में सहायता कर सकता है।

राजनैतिकतन्त्र व्यक्तियों के व्यवहार को उस आदर्श के अनुसार निम्न अवरोधी प्रवाह देते हैं जिसका वह अनुसरण करते हैं। निरंकुश तन्त्र ऐसे नागरिकों का निर्माण करता है जो पूर्णतया अनुशासित होते हैं, सदैव उच्च अधिकारियों के आदेश–पालन को तत्पर रहते हैं और कार्यक्षमता के उचित स्तर तक उठने का प्रयत्न करते हैं जिससे राज्य द्वारा निर्मित उद्देश्यों की प्राप्ति हो। एक लोकतांत्रिक, तन्त्र दूसरी ओर, नागरिकों को तदनुसार विचारों एवं कार्यों की स्वतन्त्रता देता है। यह तन्त्र मुक्त अनुशासन में विश्वास रखता है और नागरिकों के व्यक्तिगत उद्देश्यों की प्राप्ति में सहयका करता है।

एक स्वच्छ राजनीति एक व्यक्ति के व्यक्तित्व को बढ़ाती है। जब एक राजनैतिक दल सत्ता प्राप्ति या सतारूढ़ रहने के लिए अवांछनीय साधनों को चुनता है तो वह व्यक्ति के व्यक्तित्व को उन सिद्धांतों के अनुसार

बना सकता जिसका वह उस राजनैतिक तन्त्रा में अनुसरण करता है। किसी भी राजनैतिक दल को देश के, जिससे वह सम्बन्ध रखता है, राजनैतिक सिद्धांतों का पालन करना चाहिए और व्यक्तियों के व्यक्तित्व को उचित स्तर तक विकसित करने का प्रयास करना चाहिए।

व्यक्तित्व–विकास एक निश्चित आयु–स्तर तक प्रतिबन्धित नहीं है, एक निरन्तर प्रक्रिया है। व्यक्ति चाहे किसी भी विशेष स्थान पर हो, वह सभी सम्बन्धित प्रयत्नों से अपने व्यक्तित्व का उचित सम्भव स्तर तक विकास कर सकता है। घर पर, परिवार में, स्कूल में सहपाठियों तथा अध्यापकों के समूह में, किसी भी स्थान पर, महाविद्यालय में या किसी अन्य संस्था में, अपने कार्य सथान पर कुछ संगठनों में, उद्यान में या कहीं भी अपने सेवानिवृत्त दोस्तों के साथ, वह अपने व्यक्तित्व को किवसित एवं स्थिति के अनुसार बनाता है जो सम्बन्धित सामाजिक संस्थाओं द्वारा प्रदान की गई है फिर भी, यह स्मरण रखा जाना चाहिए कि व्यक्तित्व–विकास का विस्तार व्यक्ति व अन्य सभी के संयुक्त प्रयत्नों पर निर्भर करता है जो उससे प्रयत्न या अप्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित सामाजिक संस्थाओं से सम्बन्ध रखते हैं।

सन्दर्भ

1. शुक्ला रामा (2000) शिक्षा के दार्शनिक आधार, अलोक प्रकाशन, आगरा।
2. पण्डे रामसकल (2002) शिक्षा के दार्शनिक व्यवसाय सामाजिक आधार, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।
3. पार्सेल टोनी (1998) सोशल सर्विस ऑफ चेन्ज इन चिन्ड्रन्स होम एनवायरमेंट।
4. गिरि एस, एन.डी. प्राथमिक शिक्षा का भविष्य, दिल्ली सी.ई.आर.टी., 1998।
5. वेस्ट, जे.डब्लू–रिसर्च इन एजू, मई दिल्ली, पब्लिकेशंस ऑफ इण्डिया, पृ॰–191।
6. डॉ॰ सिंह गाया–उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आर.लाल. बुक डिपो, मेरठ।

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: 2584-0983 (Online) Impact-Factor, RPRI-3.87
Volume-01, Issue-03, March- 2024
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-March-2024/33

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

सुमन कुमारी एवं डॉ0 धर्मेन्द्र सिंह

For publication of research paper title

"बालक के सांस्कृतिक एव सामाजिक विकास में परिवार की भूमिका"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-01, Issue-03, Month March, Year- 2024, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com